

सुविचार

कामयाब लोग अपने फैसले से दुनिया को बदल देते हैं और नाकामयाब लोग दुनिया के डर से अपने फैसले बदल देते हैं।

ममता के अपने हुए पराये

वाकई राजनीति बड़ी निर्मम होती है जब तक कोई सत्ता में रहता है तो बेगाने भी उसके अपने बन जाते हैं और सत्ता से बाहर होते ही उनके अपने भी पलक झपकते ही पराये हो जाते हैं। बंगाल विधानसभा चुनाव में तृणमूल कांग्रेस पार्टी की हार के बाद वहां की पूर्व मुख्यमंत्री और टीएमसी सुग्रीमों ममता बनर्जी की हालत आज ऐसी हो गई है कि एक माह पूर्व तक उनके साथ जो हजारों की भीड़ चलती थी और उनके साथ चलने में गर्व महसूस करती थी वह अब उनके साथ चलने में शर्म महसूस करने लगी है। नतीजतन अब भीड़ पूरी तरह छट गई है। उन्होंने टीएमसी में उठी बगावत की आंभी को महेनजर रखकर अपने घर पर सभी विधायकों और सांसदों की बैठक बुलाई तो उसमें मात्र छह सांसद और आठ विधायक ही पहुंचे जबकि टीएमसी के कम से कम 20 विधायक तो अभी भी उनके साथ होने का दावा किया जा रहा है। वहीं लोकसभा और राज्यसभा मिलाकर टीएमसी के 41 सांसद हैं लेकिन सत्ता बनर्जी के बुलावे पर सिर्फ छह सांसद पहुंचे और इनमें भी एक उनका भतीजा अभिषेक बनर्जी है। इसका मतलब यह कि अब उनके साथ सिर्फ पांच सांसद ही बचे हैं। इसी से स्पष्ट है कि टीएमसी में बगावत की आंभी अब प्रचंड तूफान के रूप में तब्दील होती जा रही है। ममता बनर्जी अब राष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय होने का मन बना चुकी है क्योंकि अब बंगाल में उनके लिए करने को कुछ नहीं रखा है। राष्ट्रीय राजनीति में जाने के लिए जरूरी है कि वे लोकसभा या राज्यसभा की सदस्य बने। टीएमसी के 60 विधायकों के अलग गुट बनाने के बाद अब उनके राज्य सभा में जाने का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता। ऐसे में लोकसभा में जाने के लिए उन्हें टीएमसी के किसी एक सांसद से इस्तीफा दिलाना होगा और वह भी ऐसा सांसद जो मुस्लिम बहुल लोकसभा सीट से जीता हो ताकि ममता बनर्जी आसानी से चुनाव जीत सके। इसके लिए उन्होंने पूर्व क्रिकेटर युसूफ पटान से बहामपुर लोकसभा सीट से इस्तीफा देने को कहा तो उन्होंने साफ मना कर दिया। जिस युसूफ पटान को ममता बनर्जी ने गुजरात से बुलाकर अपने दम पर बंगाल से सांसद बनाया आज वो भी ममता बनर्जी के लिए अपनी सीट खाली करने को तैयार नहीं है। ऐसे में कोई और वरिष्ठ सांसद ममता बनर्जी के लिए अपनी लोकसभा सीट छोड़ेगा ऐसी संभावना दूर दूर तक नजर नहीं आ रही है। ममता बनर्जी के सामने एक ही विकल्प बचता है कि वे अपने भतीजे अभिषेक बनर्जी से डॉयमंड हार्बर लोकसभा सीट खाली करवा दें और वहां से उपचुनाव लड़ें। किन्तु यहां से भी शायद ही अभिषेक बनर्जी इस्तीफा देने को तैयार हो यदि हो भी गये तो वहां बुआ भतीजे के खिलाफ जो भारी असंतोष है उसे देखते हुए ममता बनर्जी की जीत की कोई गारंटी नहीं होगी। यदि वे वहां से लोकसभा चुनाव हार गईं तो उनके लिए यह और भी बड़ा झटका होगा। जिससे वे कभी उबर नहीं पाएंगी और केन्द्रीय राजनीति में सक्रिय होने का उनका सपना भी चकनाचूर हो जाएगा। वैसे भी इंडी गठबंधन में ममता बनर्जी को अब उतना महत्व नहीं मिलेगा। इस बीच जिस हुमांयू कबीर को ममता बनर्जी ने टीएमसी से हकाल दिया था और उन्होंने अपनी अलग पार्टी बनाकर ममता बनर्जी को अपनी ताकत दिखा दी थी उन्होंने ममता बनर्जी के जले पर नमक छिड़कते हुए यह ऑफर दिया है कि वे चाहे तो हुमांयू कबीर की एक विधानसभा सीट रेजी नगर से चुनाव लड़ सकती हैं। वे अपने से अपनी पार्टी का उम्मीदवार खड़ा नहीं करेंगे। गौरतलब है कि हुमांयू कबीर ने दो सीटों से जीत दर्ज की थी जिसमें से एक उन्हें छोड़ना है। हुमांयू कबीर ने ममता बनर्जी को ऑफर देकर यह साबित कर दिया कि भले ही ममता बनर्जी के अपने अब पराये हो गये हों लेकिन वे पराये होकर भी उनके अपने हैं। बहहाल अब यह देखना दिलचस्प होगा कि अपने राजनीतिक जीवन के सबसे बड़े संकट से गुजर रही ममता बनर्जी अब अपनी पार्टी को बचाने और खुद अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए क्या रणनीति बनाती हैं और इसमें वे कितनी कामयाब हो पाती हैं।

सद्गुरु बोधामृतम्

प्रयास करो काम क्षेत्र में न रहकर राम क्षेत्र में रहो। साधक को कभी रिस्क नहीं लेना चाहिए; पूर्णता जैसे एक शिशु अपने मां पर आश्रित रहती है, शिष्य को पर जो आत्मा से परिचय भी पूर्ण रूप से उस शिशु करा दे उसे सद् ?गुरु की तरह समर्पित अपने कहते हैं।

आज का इतिहास

नई दिल्ली(वार्ता)। 1893: महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका के पीटरमैरिट्सबर्ग में ट्रेन से बाहर फेंके जाने के बाद, रंगभेद के खिलाफ अपने पहले सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा की शुरुआत की।
1979: भारत के दूसरे प्रायोगिक रिमोट सेंसिंग उपग्रह 'भास्कर-प्रथम' का सोवियत संघ के कॉसमॉस-3 एम रॉकेट की मदद से सफल प्रक्षेपण किया गया।
1955: अमेरिका के लॉस एंजिल्स में पहले 'ड्राइव-इन' मूवी थियेटर (गाड़ी में बैठकर फिल्म देखने की सुविधा) की शुरुआत हुई।
1998: अमेरिका के टेक्सास में जेम्स बर्ड जूनियर नामक अश्वेत व्यक्ति के साथ नस्लीय घृणा के कारण दिल दहला देने वाली घटना घटी, जिसने बाद में अमेरिकी नागरिक अधिकार कानूनों को मजबूत करने में मुख्य भूमिका निभाई।



महेन्द्र तिवारी

प्रधानमंत्रियों को देखा, लेकिन कुछ नेता ऐसे रहे जिन्होंने केवल शासन नहीं किया बल्कि भारतीय राजनीति की दिशा और स्वरूप को भी गहराई से प्रभावित किया। जवाहर लाल नेहरू, इंदिरा गांधी और अटल बिहारी वाजपेयी जैसे नेताओं के बाद यदि किसी प्रधानमंत्री ने सबसे अधिक प्रभाव छोड़ा है तो वह नरेंद्र मोदी हैं। 10 जून 2026 का दिन इसी कारण राजनीतिक दृष्टि से विशेष महत्व रखता है, क्योंकि इस दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक ऐसे रिकॉर्ड के साथ चर्चा के केंद्र में होंगे जो भारतीय राजनीति में उनके लंबे और प्रभावशाली सफर का प्रतीक माना जा रहा है।

नरेंद्र मोदी ने पहली बार 26 मई 2014 को प्रधानमंत्री पद की शपथ ली थी। उस समय भारतीय जनता पार्टी ने लोकसभा चुनाव में पूर्ण बहुमत प्राप्त किया था। यह जीत इसलिए ऐतिहासिक थी क्योंकि लगभग 30 वर्षों बाद किसी एक दल को स्पष्ट बहुमत मिला था। उस दौर में देश भ्रष्टाचार, आर्थिक सुस्ती और राजनीतिक अस्थिरता जैसे मुद्दों से जूझ रहा था। जनता एक ऐसे नेतृत्व की तलाश में थी जो निर्णायक दिखाई दे और देश को नई दिशा दे सके। नरेंद्र मोदी ने विकास, सुशासन और मजबूत नेतृत्व के नारों के साथ चुनाव अभियान चलाया और जनता ने उन्हें भारी समर्थन दिया।



अपनी शुरुआत से ही खेत-खलिहानों से लेकर घर और दफ्तरो तक आकाशवाणी देश की धड़कन बनी रही है। एक दौर में आकाशवाणी से जब सुरू गुंजते थे, जब कोई संदेश प्रसारित किया जाता था, तब माना जाता था कि संगीत की लहरियों में देश झूम रहा है, संदेशों के जरिए देश बोल रहा है. आकाशवाणी ने अपनी यात्रा में लोगों का मनोरंजन भी किया है, सूचनाएं भी दी हैं, संकट के क्षणों में राष्ट्र को आगाह भी किया है, खेती-बाड़ी से लेकर शिक्षा जगत से जुड़ी जरूरी और फ़यदेमंद सूचनाएं भी दी हैं..अपनी सहज उपलब्धता और तकनीक के जरिए देश के हर वर्ग, हर आयु के लिए आकाशवाणी के सपर सजते रहे हैं..यही आकाशवाणी आठ जून को अपनी गौरवशाली यात्रा के नब्बे वर्ष पूरे करने जा रही है। इस अहम मौके हमने आकाशवाणी के महानिदेशक राजीव कुमार जैन से विशेष बातचीत की है। प्रस्तुत है, इसी बातचीत के अंश...

प्रश्न- आकाशवाणी की नब्बे वर्ष की गौरवशाली यात्रा के लिए आपको बधाई..आकाशवाणी ने अब तक कई सोपान पूरे किए हैं..इस मौके पर आप क्या कहना चाहेंगे..
महानिदेशक ङ्गू बधाई आपको भी...आकाशवाणी को यहां तक पहुंचाने में हमारे प्रोग्राम प्रोड्यूसरों, तकनीशियनों और इंजीनियरों के साथ इससे जुड़े रहे हर शख्स का योगदान है..लेकिन चाहे इंजीनियर हों या फिर प्रोग्राम बनाने वाले हमारे प्रतिभाशाली और योग्य लोग या फिर तकनीशियन..उन्होंने अपनी पूरी ऊर्जा देश

2014 की जीत केवल एक चुनावी विजय नहीं थी बल्कि भारतीय राजनीति में एक बड़े बदलाव का संकेत थी। लंबे समय तक राष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में रहने वाली कांग्रेस पार्टी पहली बार इतनी कमजोर स्थिति में पहुंच गई। दूसरी ओर भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रीय राजनीति की सबसे बड़ी शक्ति बनकर उभरी। नरेंद्र मोदी का व्यक्तित्व इस परिवर्तन का मुख्य केंद्र बन गया। गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में उनकी पहचान पहले से ही एक विकासवादी नेता की बन चुकी थी और उसी छवि को राष्ट्रीय स्तर पर विस्तार मिला।

इसके बाद 2019 का लोकसभा चुनाव आया। सामान्यतः किसी सरकार के 5 वर्षों के बाद सत्ता विरोधी लहर देखी जाती है, लेकिन नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने पहले से भी अधिक सीटें जीत लीं। इस विजय ने यह स्पष्ट कर दिया कि मोदी केवल एक लोकप्रिय नेता नहीं बल्कि राष्ट्रीय राजनीति के सबसे प्रभावशाली व्यक्तित्व बन चुके हैं। 2019 की जीत के बाद उनकी राजनीतिक स्थिति और मजबूत हुई। जम्मू कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाना, तीन तलाक कानून और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर उनकी सरकार ने कई ऐसे फैसले लिए जिनका व्यापक राजनीतिक प्रभाव पड़ा।

2024 के लोकसभा चुनाव में नरेंद्र मोदी लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बने। स्वतंत्र भारत के इतिहास में यह उपलब्धि अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। लगातार तीन बार सत्ता में लौटना किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में आसान नहीं होता। इसके लिए केवल चुनावी रणनीति ही नहीं बल्कि व्यापक जनसमर्थन, मजबूत संगठन और प्रभावी नेतृत्व की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि मोदी की तीसरी पारी को भारतीय राजनीति के बड़े घटनाक्रमों में गिना जाता है।

10 जून 2026 को नरेंद्र मोदी के राजनीतिक जीवन को लेकर चर्चा इसलिए तेज है क्योंकि वे लंबे समय तक लगातार प्रधानमंत्री बने रहने वाले नेताओं की सूची में और अधिक मजबूत स्थिति प्राप्त करेंगे। भारतीय राजनीति में लंबे कार्यकाल का विशेष महत्व माना जाता है क्योंकि लोकतंत्र में जनता हर चुनाव में सरकार को बदलने का अधिकार रखती है। ऐसे में यदि कोई नेता लगातार वर्षों तक जनता का समर्थन बनाए रखता है तो यह उसकी राजनीतिक क्षमता और जनस्वीकार्यता को दर्शाता है।

स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू लगभग 16 वर्ष 286 दिन तक लगातार प्रधानमंत्री रहे। यह रिकॉर्ड आज भी सबसे लंबा लगातार प्रधानमंत्रित्व माना जाता है। नेहरू ने 15 अगस्त 1947 से लेकर 27 मई 1964 तक देश का नेतृत्व किया। उनके सामने विभाजन की त्रासदी, आर्थिक कमजोरी, संस्थाओं के निर्माण और अंतरराष्ट्रीय पहचान जैसी अनेक चुनौतियाँ थीं। उन्होंने लोकतांत्रिक संस्थाओं की नींव मजबूत करने, सार्वजनिक क्षेत्र के विकास और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने का प्रयास किया। आधुनिक भारत के निर्माण में उनकी भूमिका को महत्वपूर्ण माना जाता है। दूसरी ओर नरेंद्र मोदी ऐसे समय में प्रधानमंत्री बने जब भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका था। उनके सामने चुनौती थी कि भारत को आर्थिक, सामरिक और तकनीकी दृष्टि से और अधिक शक्तिशाली बनाया जाए। मोदी ने राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक पहचान और मजबूत नेतृत्व को अपनी राजनीति का मुख्य आधार बनाया। उन्होंने विदेश नीति में भी सक्रियता दिखाई। अमेरिका, फ्रांस, रूस, जापान और खाड़ी देशों के साथ भारत के संबंधों को नई गति मिली। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की भूमिका पहले की तुलना में अधिक प्रभावशाली दिखाई देने लगी।

लोगों ने जोरदार स्वागत किया। पहले रेडियो के जरिए सूचनाएं और समाचार दिए जाते थे। लेकिन धीरे-धीरे रेडियो पर गीत-संगीत और नाटक जैसे कार्यक्रम प्रसारित किए जाने लगे। शुरू में रेडियो सेट बड़े थे, इसलिए सबके लिए उन्हें खरीदना मुश्किल था। शुरुआत में रेडियो पर लाइसेंस फीस भी लगती थी। शुरू में रेडियो प्रसारण और कार्यक्रम निर्माण की तकनीक जटिल थी। फिर भी चूंकि यह माध्यम नया था, नया होने के साथ चमकतरी भी था..लिहाजा लोगों में इसका आकर्षण बढ़ने लगा। फिर जैसे ही प्रसारण और रिसिवर तकनीक में सुधार हुआ, लोगों तक सस्ते ट्रांजिस्टरों की पहुंच बढ़ी, आकाशवाणी को लोगों ने हाथोंहाथ लिया। देखते ही देखते रेडियो देश की धड़कन बन गया।

एफएम नेटवर्क का विस्तार हमारी प्राथमिकता है

लोगों ने जोरदार स्वागत किया। पहले रेडियो के जरिए सूचनाएं और समाचार दिए जाते थे। लेकिन धीरे-धीरे रेडियो पर गीत-संगीत और नाटक जैसे कार्यक्रम प्रसारित किए जाने लगे। शुरू में रेडियो सेट बड़े थे, इसलिए सबके लिए उन्हें खरीदना मुश्किल था। शुरुआत में रेडियो पर लाइसेंस फीस भी लगती थी। शुरू में रेडियो प्रसारण और कार्यक्रम निर्माण की तकनीक जटिल थी। फिर भी चूंकि यह माध्यम नया था, नया होने के साथ चमकतरी भी था..लिहाजा लोगों में इसका आकर्षण बढ़ने लगा। फिर जैसे ही प्रसारण और रिसिवर तकनीक में सुधार हुआ, लोगों तक सस्ते ट्रांजिस्टरों की पहुंच बढ़ी, आकाशवाणी को लोगों ने हाथोंहाथ लिया। देखते ही देखते रेडियो देश की धड़कन बन गया।

प्रश्न : आज आकाशवाणी आपके नेतृत्व में आगे बढ़ रही है। इस मुकाम पर आप आकाशवाणी को किस रूप में देखते हैं?

महानिदेशक- चूंकि रेडियो सहज माध्यम है, इसके जरिए सूचनाओं को तत्काल सुदूर जगहों तक पहुंचाया जा सकता है, इसलिए आज भी आपात् स्थिति में यही सबसे सहज माध्यम है। मैं कह सकता हूं कि आकाशवाणी की यही ताकत है। आज का इंटरनेट का बोलबाला है। इंटरनेट पर कंन्वेजेंस के जरिए आज हर माध्यम यानी अखबार, रेडियो और टीवी उपलब्ध हैं। रेडियो का जब भी हम जिक्र करते हैं तो हमारे सामने सिर्फ आवाज केंद्रित माध्यम की छवि उभरती है। आकाशवाणी अब भी पारंपरिक तकनीक पर रेडियो सेटों के जरिए उपलब्ध है। लेकिन तकनीकी क्रांति के साथ यह नए रूप में भी उपलब्ध है। अब आकाशवाणी पॉडकास्ट भी कर रहा है। आकाशवाणी इंटरनेट के प्लेटफ़ॉर्म पर उपलब्ध है। पारंपरिक ऑडियो माध्यम के रूप में उपलब्ध होने के

मोदी सरकार के दौरान अनेक कल्याणकारी योजनाएँ भी शुरू की गईं। जन धन योजना के माध्यम से करोड़ों लोगों के बैंक खाते खोले गए। उज्ज्वला योजना के अंतर्गत गरीब परिवारों को गैस कनेक्शन उपलब्ध कराए गए। आयुष्मान योजना के जरिए गरीबों को स्वास्थ्य सुरक्षा देने का प्रयास हुआ। स्वच्छ भारत अभियान ने स्वच्छता को राष्ट्रीय मुद्दा बनाया। कोरोना महामारी के दौरान मुफ्त राशन योजना ने करोड़ों लोगों को राहत दी। इन योजनाओं ने गरीब और निम्न मध्यम वर्ग के बीच मोदी सरकार की लोकप्रियता बढ़ाने में बड़ी भूमिका निभाई।

हालाँकि विपक्ष लगातार सरकार की आलोचना भी करता रहा है। बेरोजगारी, महंगाई, कृषि संकट और सामाजिक तनाव जैसे मुद्दों पर सरकार को घेरने की कोशिश की गई। कई विश्लेषकों का मानना है कि आर्थिक असमानता अभी भी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। युवाओं के लिए एंजाम रोजगार उपलब्ध करना आने वाले समय में सरकार के सामने सबसे कठिन कार्यों में से एक होगा। किसान आंदोलन ने भी यह दिखाया कि बड़े जनसमूह सरकार की नीतियों का विरोध कर सकते हैं। लेकिन इन चुनौतियों के बावजूद नरेंद्र मोदी की राजनीतिक लोकप्रियता लंबे समय तक बनी रही।

भारतीय जनता पार्टी की संगठनात्मक शक्ति भी मोदी की सफलता का एक बड़ा कारण रही है। रािय स्वयंसेवक संघ और भाजपा का विशाल कार्यकर्ता तंत्र बूथ स्तर तक सक्रिय रहता है। चुनाव प्रबंधन, प्रचार अभियान और मतदाताओं तक सीधा संपर्क भाजपा की विशेषता बन चुके हैं। इसके अलावा विपक्ष की एकजुटता की कमी ने भी भाजपा को लाभ पहुंचाया। कई राज्यों में विपक्षी दल आपसी मतभेदों के कारण मजबूत चुनौती प्रस्तुत नहीं कर सके।



सद्गुरु ऋतेश्वर

गुरु के रहना चाहिए। जा पर कृपा साहिब की होई। ता पर कृपा करे सब कोई।। जो शब्दों से परिचय करा दे उन्हें शब्द गुरु कहते हैं. टीचर ! पर जो आत्मा से परिचय करा दे उसे सद् ?गुरु कहते हैं।

पाठकों की बात

पत्र, प्रतिक्रियाएं, सोशल मीडिया





दृश्य मनोरम प्रकृति के मन को भाते कितने हैं, हरे परे कोमल पते भी सपने भरमाते कितने हैं। कल कल नाद ये नदियों का गम्भीर प्रकति पर्वत न्यारी निस्तब्ध से नीले अम्बर में छिपी हुई है कथा हमारी। फूलों की क्षणभंगुर मुस्कान जीवन का संदेश सुनाती, जो खिलकर भी झरना जाने वो सच्ची सुंदरता पाती। पत्तों की सरसाहट में समय का मर्म छिपा रहता, सुन ले प्रकृति की वाणी जो उसका ही अंतर्मन जगाता। दृश्य मनोरम प्रकृति के मन को भाते कितने हैं, पर उससे भी सुंदर थे क्षण जब हम स्वयं से मिलते हैं। - मधुलिका शुक्ला



संवेदनाओं से उलझती पल-पल चलती सांसें गहन चिंतन है मांगती ज्वत् होती उच्छ्वास से नजरो का खालीपन शून्य बस उपजा रही बौद्धिकता में श्रेष्ठ है कहा-सुना झूठ्ला रही एक दीवाना वहीने में खुद सा कोई ढुंढता है पथर के बुत को चुम दिल की बात कहता है छोड़ आया हूँ वह शहर कक्रौटो से बना जंगल है तू सुन सकता है बात मेरी सुकून यहां पल-पल है। - सपना चन्द्रा



मासूम था बचपन खेल थे निराले, मन के थे गोरे तन के थे काले, सोते थे छत पर गिनते थे तारे, तारे जो होते थे ढेर सारे, कब गुजरती थी शाम शाम से तब वक्त का नहीं था कोई हिसाब , सांथ हमारे होती थी सपनों की किताब, पत्रे किताब के वो भूले ना भुलके, काश वो दिन फिर लौट आये, बस चलते तो पहिया चक्का का वापस घुमां दूँ, आसान नहीं कि वो बचपन भुला दूं। - प्रशांत श्रीवास्तव



सूरज मत छू, अँगुलियाँ जल जाएँगी। चाँद पकड़ना मत मुड़ियाँ जम जाएँगी। रात बहुत हुआ अब सो जा, तारों से तो खेलो मत, हथेलियों छिल जाएँगी। परेशान हूँ मैं तेरी शराबतों से, और समंदर मत ला देहरी पर, घड़े सब भरे पड़े हैं नमकीन पानी से। बस एक लोटकी पोखर का पानी भर ला, नहीं तो ये प्यास नहीं बुझ पाएगी। - राकेश मिश्रा



कभी हँसते हुए छोड़ देती है ये जिंदगी कभी रोते हुए छोड़ देती है ये जिंदगी। *न पूर्ण विराम सुख में, न पूर्ण विराम दुःख में, बस जहाँ देखो वहाँ अल्पविराम छोड़ देती है ये जिंदगी। प्यार की खोर सजाये रखो, दिल को दिल से मिलाये रखो, क्या लेकर जाना है साथ मे इस दुनिया से, मीठे बोल और अच्छे व्यवहार से रिश्तो को बनाए रखो। - पितांबर श्रीवास्तव



ये मत पूछो कहाँ उलझी हुई हूँ मैं खुद से खुद मे हो जकड़ी हुई हूँ नहीं है होश कुछ मुझको मेरा ही किसी अहसास में लिपटी हुई हूँ ये दुनिया हो चुकी बेमानी तबसे तेरे दिल की मैं जब कैदी हुई हूँ गूँजल बन कर मैं उसकी हो न पाई रुसाई बन के ही छाई हुई हूँ दिखाई कैसे मैं दूँगी किसी को तेरी आंगूठी में पिघली हुई हूँ सुनाओ मत मुझे दुनिया के किसी किसी की मैं रानी हुई हूँ मेरी 'ममता' में पेट इल्जाम देना मैं जो भी हूँ...तेरी ढाली हुई हूँ। - ममता लड़ीवाल

Ramaquiz

पहेली									
शब्द सामर्थ्य -062									
(भाग्यवा न्हा)									
बाएँ से दाएँ 1. जल छिड़कना, राखा के निर्माण, यानी 24. डूब, सोब कावर्गानी, कस्बानी, प्रसन्नगीन सिंहरान रोहन का अनुपम 4. 25. एक अरिष्ट राक्षस पक्षी, एक कार्य 13. दारी, लोकगीत, बंदी, मावाद, पीव (अं) 6. जाति 7. 26. राज्य का विदेश में प्रतिनिधि। गुजरात स्त्री 14. प्रवृत्त करने वाला, हाथ से धीरे-धीरे लौकना, ऊपर से नीचे									
9. कमल रोग से ग्रसिता 1. विचित्र, अद्भुत 2. अंदर ही 16. श्रीकृष्ण के चड़े भाई, हलधर व्यक्ति (अं.) 11. किरण 12. अंदर हाति पहुंचाना 3. वचन, 17. सामान (अं.) 21. संसार, छीक, लड़का 13. दुपहारी, वाणी 4. गुणगढ़, जो रातले से दुनिया 22. अमम, चमेती की रस्किन 15. विपद, कासामुनी, भटक गया 5. युवापन सिंह बाँव का एक पीपल और फूल 23. तकरार 18. सन्तु, दल, समुपन को पट्टी का संक्षिप्त नाम 8. पर्वतवि, परासन।									

शब्द सामर्थ्य क्रमोंक 061 का हल									
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27	28	29	30



